Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

हिन्दी साहित्य में महिला साहित्यकारों का स्त्री–विमर्श

करमजीत सिंह
शोधार्थी
हिंदी विभाग
विजयाराजे शा. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मुरार, ग्वालियर (म.प्र .)

समस्त विषयों पर विमर्श का माध्यम साहित्य है यह विशिष्ट प्रकार की चेतना से युक्त वह परिपकृत और कलात्मक जरिया है जो न केवल बहस को आमंत्रित करने की क्षमता रखता है, बल्कि विद्रोह से लेकर विवेक तक तथा चेतना तक प्रत्येक दृष्टिकोण, इसके भीतर से उपजने वाले सवालों का हिस्सा होते है।

हिन्दी साहित्य में 'स्त्री–विमर्श' को लेकर समय–समय कथाकारों द्वारा एक आंदोलन को नवीनता की दृष्टि प्राप्त हुई समाज में स्त्रियों की जो भूमिका रही उसको व्यक्त कर प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक स्त्री कभी सौन्दर्य रूवरूप–कभी देवी स्वरूप कभी जगत जननी के रूप देखी जाती रही है सूफी–संतों ने हिन्दी साहित्य में ईश्वर में उसका प्रक्षेप नियत किया।

आधुनिक युग के काव्य में उसे 'श्रद्धा' कहकर पुनः अभिशिप्त करने का प्रयास किया परंतु मध्ययुगीन मानसिकता कहीं–न–कहीं व्याप्त थी। आधुनिक युग में ही गद्य व पद्य खड़ी बोली के विकास ने स्त्री–चेतना को लेकर विवाद शुरू हुआ। गद्य साहित्य समाज के समीपस्थ हुआ और गद्य सीधे तौर पर यथार्थ को व्यक्त करने लगा।

इसकी प्रतिबद्धताएँ पाठक वर्ग के मनोरंजन से उठकर या तो सीधे माध्यमों में आई या फिर वंचित वर्ग की जीवन गाथा बनकर उपन्यास और कहानियों के रूप में स्थान पाने लगी।

कथा–साहित्य ने हिन्दी की क्षमता और प्रभाव से अवगत कराना शुरू कर दिया। यह क्षमता स्त्रियों के अनछुए पहलुओं को उजागर करा देने वाली थी दैवीय रूप और करूण–क्रंदन दोनों से हटकर 'स्त्री–विमर्श' और 'नारी–सशक्तिकरण' की अवधारणा को अपनाया।

वर्तमान युग चुनौतियों से भरा युग है। इन परिस्थितियों चुनौतियों और संभावनाओं को लेकर सापेक्ष लेखकों का चिंतन 'स्त्री–विमर्श' की सामाजिक, मानसिक, आर्थिक एवं व्यवहारिक परिस्थितियों को उसके दायरे से निकालकर 'स्त्री–विमर्श' जैसी अनंत विस्तार की संभावनाओं को जन्म दिया जाने लगा।

'स्त्री–विमर्श' के पहले दौर में स्त्री ने समाज की जकड़न विवश्ता, क्रूरता, रूढ़िवादिता को समाप्ति के लिए समाज को ऊँचे स्वर में जगाया। स्त्री की यह मानसिक, शारीरिक व सामाजिक प्रक्रिया थी जो कथा–साहित्य में स्वाभाविक रूप से व्यक्त हुई।

इसी विषम काल में विश्वसनीय यथार्थ को सामने लेकर महिला–कथा–लेखिकाओं एवं पुरूष–कथा–लेखकों ने अपनी सशक्त उपस्थिति हिन्दी कथा–साहित्य के पटल पर दर्ज करा दी।

आठवें–नवें दशक का यह दौर समकालीन समय तक चला जा रहा है यह सम्पूर्ण दौर इतना महत्वपूर्ण है कि लेखिकाओं व लेखकों की ऐतिहासिक लेखनी को बल देता है इसकी प्रमुख प्रवृत्तियों में 'स्त्रियों' को लेकर मुख्यतः उपस्थिति है।

'चेतना' एक दृष्टिकोण था जो स्थापित हुआ लेकिन 'विमर्श' 'लक्ष्य' तक पहुँचने के 'मार्ग' के रूप में दिखाई देता है।

साहित्य में 'स्त्री–विमर्श' की चिंतन प्रतिक्रिया गद्य–पद्य दोनों ही रूपों में व्याप्त है परन्तु ''दलित साहित्य में स्त्री–विमर्श'' एक नया साहित्यिक विमर्श है।

चूंकि स्त्री जगत–जननी के रूप में विख्यात है इसलिए लेखक व लेखिकाओं की अपनी विचारक पृष्ठ भूमि होती है। लेखक न तो स्त्रियों को वर्ग–विशेष के आधार व्यक्त करता है वह तो उसके मन के भावों के समतुल्य होकर उसकी मनः स्थिति को ईमानदारी से व्यक्त करने का एक प्रयास करता है जब विचार किया जाने लगा तक समझ आया कि लेखक तो सिर्फ सच्चाई के धरातल पर विचारकों व मनः स्थिति को व्यक्त करता है वह समाज में हो रहे अत्याचारों , अंधविश्वासों, रूढ़ियों, पाखण्ड़ों व समाज की दयनीय सोच को अपनी लेखनी द्वारा व्यक्त करता है।

'स्त्री–विमर्श' के शुभचिंतकों के द्वारा लिखी जाने वाली लेखनी गद्य–पद्य दोनों ही विधाओं में व्याप्त है। कहा जाता है कि एक स्त्री–ही–स्त्री की पीढ़ा को समझ सकती है वहीं एक स्त्री–ही–स्त्री की पीढ़ा को बढ़ाने वाली है। साहित्यिक विधाओं में तो स्त्री को वर्ग विशेष की पृष्ठभूमि के अनुरूप ही व्यक्त किया गया है। लेखकों ने उसके पैदा होने से लेकर समस्त जीवन की विडम्बनाओं और चुनौतियों को व्यक्त किया है।

कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श के पहलुओं को व्यक्त करने वाली लेखिकाएँ हैं

मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, शिवानी मृदुला गर्ग, कृष्णा सोवती, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, मेहरूनिसा, परवेज, नासिर शर्मा, चित्रा मुद्गल, राजी सेठ, डॉ. सूर्यबाला, डॉ. निर्मला पुतुल, डॉ. आशारानी बोहरे, इत्यादि।

साहित्यिक विचार आंदोलन के रूप में हमारे सामने उपस्थिति है एवं चुनौतियां व सम्भावनाएँ व्याप्त हैं।

अपने गंतव्य की ओर इन प्रस्थान बिंदुओं पर विचार करते हुये ही आगे बढ़ा जा सकता है।

क) स्त्री आशय, परंपरागत एवं आधुनिक रूपः–

भारतीय शब्दावली पौराणिक सदंर्भों से अनुप्राणित है अतः प्रत्येक शब्द का सामान्य अर्थ इसी पार्थ आधार से परिचालित होता है। अतः वृहत् हिन्दी शब्दोकोश से 'स्त्री' का आशय भी हमें परंपरागत रूप में प्राप्त होता है। तदानुसार – औरत (शरीर रचना एवं स्वभाव आदि के आधार पर स्त्रियों के चार भेद है।)

पद्मिनी चित्राणी, शांखिनी हस्तिनी, पत्नी, मादा, पशु, सफेद चींटी–दीमक, एक वृत।''

आधुनिक शिक्षित नारी को समझने के लिए नारी की स्थिति का इतिहास जानना जरूरी है। डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर नेएक स्थान पर कहा है कि –

''भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री दलितों में भी दलित है। इस व्यवस्था ने ना केवल उसकी अस्मिता को नकारा है। अपितु उसे हमेशा दोयम दर्जा दिया है ज्ञान क्षेत्र से लेकर धर्म में उसका प्रवेश वर्जित या हजारों वर्षों से स्त्री उपेक्षिता का जीवन जी रही थी।''2

इस बात से आज लगभग सभी परिचित है। नारी को देवी कहने वाले समाज में उसकी दयनीय स्थिति थी, एरिका जौंग ने भी कहा है कि– ''स्त्रियों का इतिहास एक मात्रा ऐसा शोषित समुदाय है जो अशक्त के रूप में आदर्श बना दी गई। उसे हजारों वर्षों से दर्दनाक यात्रा करनी पड़ी 19वीं. शताब्दी से ही उसकी भीतरी घुटन को शब्द मिलने लगे।

धर्म प्रधान भारतवर्ष में वेद–पुराण–स्मृति, इतिहास, दर्शन ने नारी को नर की अर्धांगिनी माना है, भारतीयों की यह अवधारणा रही कि नारी के बिना पुरूष अधूरा है। उसके बिना कोई भी मंगलपूर्ण कार्य पूरा नहीं होता था।

स्त्री को लक्ष्मी माननी वाले भारतीय परिवारों में यह माना जाता है जहाँ स्त्री को मान–सम्मान दिया जाता है वह परिवार हमेशा तरक्की की ओर अग्रसर होता है।

वैदिक काल में पुत्री का जन्म पुत्र की अपेक्षा श्रेष्ठ माना जाता था कन्या पुत्र के सम्मान प्रत्येक क्षेत्र की अधिकारिणी माना जाती थी। नारी को वेदाध्ययन, सृजन तथा तपस्या करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी उस समय देश में पर्दा प्रथा नहीं थी। नारी समाज के प्रत्येक कार्यों को स्वच्छंदतापूर्वक करने में अपना योगदान प्रदान कर सकती थी अपना जीवन साथी चुनने के लिए स्वतंत्र थी।

धीरे–धीरे नारी पर प्रतिबंध लगने लगे। मनु ने नारी को देवी की उपाधि को विभूषित करते हुए भी प्रतिबंधों के कटघरे में सीमित कर दिया।

उसकी स्वतंत्रता समाप्त हो गई और वह पुरूषों के हाथों में सौंप दी गई।

रामायण और महाभारत काल में नारी ने पूर्ववत् स्वतंत्रता प्राप्त की। स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा घर पर होती थी। राजकुल की ललनाएँ परामर्श देती थी। परंतु वह शासिका नहीं बन सकती थी। उनका अपहरण किया जाता था, जर्बदस्ती विवाह भी किये जाते थे। गौतम बुद्ध के समय स्त्रियों बौद्ध धर्म में दीक्षा ले सकती थी इस सबल को पाकर नारी ने कई बार अपना विद्रोहिणी रूप दिखाया था।

बुद्ध निर्वाण के पश्चात् संघ में फैले, भ्रष्टाचार के कारण एक बार फिर नारी को बंधनों में जकड़ा गया।

हिन्दी का सिद्ध साहित्य इसका प्रमाण है। इसके बाद मुस्लमानों के आक्रमणों एवं अत्याचारों के फलस्वरूपी नारी की स्थिति और भी विचारनीय हो गई।

पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह, जौहर प्रथा, बाल–विवाह आदि बर्बदतापूर्ण रीति–रिवाजों के प्रचलन में नारी जीवन को नरकमय बना दिया।

वह पुरूषों के द्वारा चार दीवारी में कैद कर दी गई उसका जीवन पुरूषों के अधीन हो गया।

महादेवी वर्मा ने नारी की स्थिति पर प्रकार डालने हुए लिखा है – ''नारी शून्य के समान पुरूष की इकाई के साथ सब कुछ है परंतु उससे रहित कुछ नहीं।

19वीं. शताब्दी के पूर्व तक नारी की स्थिति इसी प्रकार थी। उसका गौरवमय पद समाप्त हो चुका था। 'संत्र नार्यस्तु पूज्ये, वाला सिद्धांत महत्वहीन हो चुका था।

इस संबंध में महादेवी वर्मा लिखती है कि – ''इस युग में हिन्दू परिवारों में आदर्श रूप में पत्नी अर्धांगिनी, ग्रहस्वामिनी, सम्मानिता मानने वाली विचारधारा केवल सिद्धांत मात्र रह गई थी। व्यवहारिक रूप में परिवार में उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। परिवार में नारी को कोई स्थान प्राप्त नहीं था, माता पत्नी, पुत्री, सभी रूपों में वह पुरूष पर आश्रित थी। पुरूष ने अपनी स्वामित्व शक्ति से लाभ उठाया उसे इतना अधिक परावलंबी बना दिया था कि वह उसकी सहायता के बिना संसार पथ में एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकती थी। ''नारी आधी दुनियाँ/ उसकी स्थिति पर प्रकाश डालते हुए डॉ. रोहिणी अग्रवाल लिखती है – ''नारी पुत्री है, भागिनी है, पत्नी है बस है नही ंतो नारी।''

घर–गृहस्थी के कार्यों में लगे रहना उसका ध्येय हो गया। शिक्षा स्त्रियों को निर्लज्ज बना देती है तथा घर विघटन का कारण होती है इस प्रकार की मान्यताओं के कारण उसे शिक्षा से दूर किया गया। स्त्री–पुरूष के उपभोग की वस्तु हो गई, तथा पुरूष के उत्पादन व मनोरंजन का साधन मात्र बनकर रह गई।

भारत में नवजागरण की प्रक्रिया 10वीं. शताब्दी में शुरू होती है। राजा राममोहन राय ने 1826 में बह्म समाज की केशवचन्द्र सेन ने 1867 में प्रार्थना समाज की, स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1620 में आर्य समाज की स्थापना की और नारी जागरण का अर्थ है जागरूकता, अज्ञान, अशिक्षा, अंधविश्वास, हीनभावना से जागना।

पुराने मूल्यों का वर्तमान संदर्भ में पुर्नमूल्यांकन करना ये मुल्य मनुष्य के आचरण और व्यवहार को इकट्ठा करते हैं मानव की निरंकुशता पर नियंत्रण रखते हैं। बल्कि मानव की संरचना करते हैं।

स्त्री का अपना कोई घर संसार नहीं होता है बचपन में वह जिस घर को अपना समझ उसको बनाने सँवारने में जीवन लगा देती है कुछ वर्षों बाद (18 से 20) उसे यह अहसास होता है कि जिस घर में उसका बचपन बीता है वह से उसे दान कर दिया जायेगा अर्थात् कन्यादान कर उसके माता–पिता अपना जीवन धन्य मानते है जबकि वह कोई वस्तु या चीज़ नहीं है। क्योंकि दान करने के बाद माना जाता है। कि उस वस्तु से देने वाले का कोई संबंध नहीं होता है। हिन्दी साहित्य में कन्यादान के कई उदाहरण कथा–उपन्यास आदि में देखने को मिलते हैं।

दलित स्त्रियों की दशा तो इसके भी विपरीत होती है। वह तो माता–पिता की गरीबी के कारण बोझ मानी जाती या किसी जमींदार या ठाकुर का कर्जा उतारने के लिए खरीदी या बेची जाती है। यहाँ उनके पैदा होने से लेकर मरने तक उनके साथ जानवरों जैसा सलूक किया जाता है।

यदि दलित महिलाएँ खेतों में काम करती है तो उसकी अस्मिता पर भेड़ियों की तरह निगाह डालने वाले पुरूष उसके साथ या तो बेहद सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार कर उनका फायदा उठाने की कोशिश करते या फिर कठोरता से उसके परिवार को धन या बल से लोभ व डराकर उनका फायदा उठाते है दलित महिलाएँ घरों में तो शारीरिक, प्रताड़नायें झेलती ही है, परन्तु मजबूरी वश बाहर शारीरिक–मानसिक व सामाजिक यातनायें झेलने के लिए मजबूर होती है।

दलित स्त्रियों की विवश्ता का मंजर जब देखते है तो वह उनकी भूख, शारीरिक प्रताड़नाये, मानसिकता, विवशता व आर्थिक तंगी उसके जीवन की कडवी सच्चाईयों को बयाँ करती है, किसी ने कहा है कि धर्म–चरित्र और ईमान, भरे पेट की बाते है। जब भूखा पेट समझौता करता है तो पूरे परिवार की विवशता को देखकर अपने चरित्र को दाव पर लगता है, ईमान जब डोलता है जब मजबूरी के हाथों विवश होता है। धर्म की बात तब की जाती है जब रोटी कपड़ा और मकान की पूर्ति हो।

हिन्दी कथा–साहित्य में दलित–स्त्रियों की करूणा ममता, व संघर्ष समझौते इसी बात को व्यक्त करते है कि साहित्य के लेखकों ने वर्ग से ऊपर उठकर स्वयं को कक्ता लेखन व गद्य–पद्य के यर्थाथ से जोड़कर उस वर्ग की पृष्ठ भूमि को ज्यों का त्यों रखा है।

हिन्दी साहित्य में महिला साहित्यकारों का विशेष योगदान रहा है। आपने अपने विचारों को समाज में होने वाली सत्य घटनाओं को लेखनी प्रदान की। आज स्त्री–विमर्श लोगों के लिए प्रेरणा प्रदान करने व स्त्रियों के मनोबल उनकी चेतना को नई दिशा में ले जाने का माध्यम है।

कथा, साहित्य में औरतों की भूमिकाओं में महिला कथाकरों के मानसिक, सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक विकास को कथा उपन्यास, नाटक, संस्मरण आदि के जरिये व्यक्त कर अहम भूमिका निभाई है।

समाज में स्त्री–विमर्श को लेखनी के रूप में व्यक्त करने वाली महिला कथाकारों में

1. मन्नू भण्डारी, 2. ऊषा प्रियवदा, 3. शिवानी, 4. मृदुला गर्ग, 5. कृष्णा सोवती, 6. मैत्रंयी पुष्पा, 7. प्रभा खेतान, 8. मेहरूनिसा परवेज, 9. नासिरा शर्मा, 10. चित्रा मद्गल, 11. राजी सेठ आदि है।

मन्नू भण्डारी–उपन्यास, महाभोज, आपका बंटी, स्वामी, कलवा, एक इंच मुस्कान (राजेन्द्र यादव के साथ)

कहानी संग्रह

1. एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु

श्रेष्ठ कहानियां, आँखों देखा झूठ

आपके लेखन में चिंतन पक्ष को प्रतिपादित किया गया है। उनकी परिस्थितियों में पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेश तथा राजनैतिक परिवेश में बांटा गया है। परिवेशगत परिस्थितियों में उनकी कहानियों एवं उपन्यासों में नारी–पुरूष के नये संदर्भों से परिचालित व अनुप्रणितं सम्बंधों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है आप पुरूष और स्त्री के निर्णायक कथ्य और परस्पर प्रेम को विषम परिस्थितियों में स्पष्ट रूप में चित्रित किया है।

उनकी लेखनी में स्त्री की जटिल परिस्थितियों में अनिख्यता के बीच खड़ी हुई है।

सामाजिक संदर्भों में उनका यह चिंतन संवेदना के आधार पर किया गया है। उन्होंने सामाजिक परिवेश में उनकी टूटन और नवीन सम्बंधों के प्रति आकर्षण के यथार्थवादी दृष्टिकोण से अंकित किया है।

मन्नू जी इस युग की प्रतिनिधि कथाकार है इन्होंने नारी जीवन के तनाव, घुटन, नारी–पुरूष के बदलते संदर्भों, यौन–संबंधों, तथा पारिवारिक संघर्षों एवं कलह को यथार्थता की पृष्ठीाूमि तक जाकर महत्वपूर्ण एवं प्रभावी बनाया है आपने भारतीय नारी की अंतरव्यथा को जितनी बारीकी से व्यक्त किया है वह प्रशंसनीय है।

वे हिन्दी कथाकारों में प्रथम पंक्ति की लेखिका है। आपने नारी हृदय के सभी मानसिक व भावनात्मक द्वन्द तथा संघर्ष को बखूबी व्यक्त किया है।

मृदुला गर्ग – उपन्यास

उसके हिस्से की धूप	–	1975 (मध्यप्रदेश साहित्य परिषद से महाराजा वीरसिंह पुरूस्कार 1975 अंग्रेजी में अनुदित)
वंशज	–	1976
चित्तकोबरा	–	1979 अंग्रेजी व जर्मन में अनूदित अंग्रेजी अनुवाद स्वंय लेखिका द्वारा।
अनित्य	–	1980
मैं और मैं	–	1984
कठगुलाब	–	1996 अंग्रेजी में अनूदित

कहानी संग्रह –

कितनी कैदे	–	1975
टुकडा–टुकडा आदमी	–	1976
डैफोडिल	–	1978 (अंग्रेजी में अनूदित)
ग्लेशियर से	–	1980
उर्फ सैन	–	1986
शहर के नाम	–	1990
सनागम	–	1996
मेरे देश की मिट्टी अहा!	–	1999
चर्चित कहानियां	–	1993
संगति–विसंगति	–	2004

नाटक – एक और अजनबी – 1978 आकाशवाणी द्वारा पुरूस्कृत

जाट का कालीन – 1993 म0प्र0 साहित्य परिषद से से0 गोविंददास पुरूस्कार प्राप्त

तीन कैदे –

निबंध संग्रह

रंग–रंग, चुकते नहीं सवाल, कुछ अटके कुछ भटके (यात्रा–संस्मरण)

अपने लेखन में आपने नारी के परिवेश परिवार और पर्यावरण के अनेक ज्वलंत मुद्दों को उठाया। 1988 से 1993 के बीच अनेक विश्वविद्यालयों में स्त्री–विमर्श, बाल मजदूरी, पर्यावरण व हिन्दी साहित्य विषयों पर व्याख्यान दिये व लेखन भी किया। आपने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कार्य किये साहित्य दृष्टिकोण ने आपको हमेशा लेखन कार्य के द्वारा समाज के विशिष्ट विषयों में नये मापदण्डों में योगदान दिया।

महिला कथाकारों में – मेहरूनिसा परवेज–मन्नू भण्डारी शिवानी, मृदुला गर्ग, ऊषा प्रियंवदा, कृष्णा सोवती, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, चित्रा मुद्गल राजी सेठ, प्रभा खेतान, चित्रा चतुर्वेदी, आदि।

उन्होंने नारी–शोषण की व्यथा का पूरी जीवंतता और जागरूकता से साहित्यिक मंच से उठाया और अपने क्रांतिकारी एवं विद्रोही तेवर के लेखन से इस और गंभीरता पूर्वक विचार करने पर बल दिया।

सदियों की घुटन, स्त्री की जाति, अधिकारों से वंचित स्त्री का शोषण, अंधविश्वास व कुरीतियों पर प्रहार पुरूषों द्वारा स्त्रियों के दृष्टिकोण पर प्रहार व उनके जीवन में संघर्ष नई सोच का विरोध इस पर महिला कथाकारों ने उनकी मार्मिक पीडा व करूणा को व्यक्त कर समाज को यह सोचने पर विवश कर दिया कि स्त्री के उद्वार के बिना समाज का विकास व उत्थान संभव नहीं है।

ऊषा प्रियंवदा – आपका नाम महिला कथाकरों में बडे सम्मान से लिया जाता है

जिंदगी और गुलाब, कितना बड़ा झूठ, कोई एक दूसरा, मेरी प्रिय कहानियां आपके प्रमुख कहानी संग्रह है।

पचपन खम्भे लाल दीवारें, रूकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा, अंर्तवशी आपके उपन्यास है।

आपकी कहानियों में नारी की घुटन, उदासी, मुक्ति पाने की छटपटाहट है आपने पारम्परिक जीवन के मोह को छोड़कर एकांतवास को अत्याधिक महत्व दिया है। आपको कहानियों में भारतीय परिवारों की टूटन की व्यथा एवं अकेलेपन के संवेदनशील चित्र है।

'फिर बसंत आया कहानी संग्रह में 'तूफान के बाद' कहानी में नारी कुछ एवं प्रेम का असफल चित्र प्रस्तुत किया है। जो दो वर्गों के मूल्यों के संघर्ष को प्रस्तुत करता है संघर्ष का कारण अजातीय विवाह है।

प्राचीन परंपराओं को तोड़कर नवीन परंपराओं का आगाज ही कथा का मूल उद्देश्य है।

'नई कोपल' कहानी में नारी की वेदना और उस पर हो रहे अन्यायों को प्रकट किया गया है, इसका कारण सास–ननद के आरोप, और अत्याचार है। इसमें बहू बिन्नी की दयनीय स्थिति एवं करूण मार्मिक स्थिति को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

ऊषा प्रियंवदा नारी वर्ग के उत्थान के प्रति छअपटाहट सहेजे हुए है सामाजिक जटिलतायें नारी के विकास में बाधा है। परिवार समाज में नारी का शोषण होता है। संस्कारिक नारी उसका विरोध या विद्रोह नहीं करती है। उसके मन की स्थितियों का वर्णन लेखिका ने बखूबी किया है।

इनकी 'वापसी' कहानी में अकेलापन गजाधर बाबू का ही नहीं बल्कि पूरे परिवार का है, जो बदलते हुए मूल्यों के साथ चलने में असमर्थ है।

''चांद ढलता रहा'' में स्त्री–पुरूष के यौनतृप्ति पर आधारित नवीन संबंधों को उभारा गया है।

कोई नहीं, झूठा दर्पण, खुले हुये दरवाजे, नींद, मछलियों, आदि इनके यूरोपिय प्रवास के समय की कथाऐं है।

'जिंदगी और गुलाब के फल' कहानी में कहानी संग्रह में नये मूल्यों का आगमन है। इस कहानी का पुरूष नायक आर्थिक दुष्टि से असशक्त है। उसकी बहन वृंदा कमाती है। अतः पुत्र होते हुए भी उसकी स्थिति परिवार में गौण है।

चित्रा मुदगल – उनके दो कहानी संग्रह है ''इस हमाम में'' और 'ग्यारह लंबी कहानियां'' में बीस कहानियां संकलित है।

आपकी कहानियों में जीवन के कटु यथार्थ एवं त्रासद स्थिति के बीच नारी की अस्तिमा, स्वावलम्बन, स्वाभिमान को तीक्षणता से मुखरित करती हुई, विद्रोह की सार्थक भूमिका को व्यक्त करती है।

इस हमाम में अधिकांश कहानियां दर्पण में प्रतिविम्व जैसी लगती है। इन कहानियों के पात्र जीवन के प्रवाह से उठाये गए, लेकिन जीवन का यह प्रवाह एक बंद और ठहरे हुए तालाब का प्रवाह ही है।

इनकी कहानियों में महत्त्वपूर्ण है कि वह अपनी रचना वस्तु को (लेखिका) अपने समय–संदर्भों से जोड़ने के उपक्रम में प्रायः हमेशा ही सफल होती है।

चित्रा मुदगल जी ने महानगरीय जीवन की कटुआहट और सर्वहारा वर्ग के प्रति विशेष लगाव आपकी कहानियों की प्रमुख विशेषताऐं है श्रमिक वर्ग के हितों के लिए आप संघर्ष करती रही है।

मंजुला भगत – उनके प्रमुख कहानी संग्रह गुलमोहर के गुच्छे

आत्महत्या से पहले, कितना छोटा सफर, बूँद और अंतिम बयान (अंतिम कहानी संग्रह) है।

उनके चार उपन्यास है।

अनारो, खातुल, तिरछी बौछार और बेगाने घर में

इन्होंने समाज परिवार से नारी की विडम्बना यथार्थ स्थिति का चित्रांकन का उनका समाधान प्रस्तुत किया है। उनके सम्पूर्ण कथा साहित्य में समाज तथा परिवार पर केन्द्रित है।

आधुनिक नारी के मन–चिंतन एवं विचार धाराओं तथा मानसिक स्थितियों को व्यक्त करना उनके लेखन का ध्येय है।

'अनारो (1976)' मध्यमवर्गीय समाज का आशवासन उपन्यास है इसके पतिधारा उपेक्षित श्रमिक अनारों का संघर्ष दर्शाया गया है।

टूटता हुआ इन्द्रधनुष (1979) – पतिव्रता भावना को परिवर्तित रूप में प्रकट करता हुआ आधुनिक प्रेमसंबंधी की व्याख्या करने वाला अजीबों–गरीब सामाजिक उपन्यास है।

'लेडिज क्लब' आधुनिक नारी जगत की पुरूषों के बराबरी करने की तमन्ना को व्यक्त करता है।

'तिरछी बौछार' (1984) में नारी के भावनात्मक धात–संघातों के भंवर में उलझने की मनःस्थिति को व्यक्त करता है।

मंजुला भगत ने दीन–दुखियों, दलितों, पिछडों व सामाजिक उत्पीड़न को भोग रहे लोगों की संवेदना के साथ गहराई से जुड़ी हुई प्रतीत होती है।

आपके कथा साहित्य में संस्कृति व सामाजिक परिवेश को बचाने की व्याकुलता दिखाई देती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

वृहत् हिन्दी कौश – पुष्ठ 131 ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणासी सस्करण 2005

साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ डॉ. विजया वारद पहला पृष्ठ भूमिका, डॉ. सूर्यनारायण रणशुंभे / एरिका जौंग / हंस पृष्ठ 71/ अंक नवम्बर 2009

महादेवी वर्मा/श्रृंखला की कड़िया / पृष्ठ 115 / राधा प्रकाशन नई दिल्ली / सं. तृतीय–1997

डॉ. रमा नवले मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी/ पृष्ठ–16 / विकास प्रकाशन, कानपुर/ सं.पृ. 2007

म्हादेवी वर्मा – अतीत के चलचित्र पृष्ठ – 29

महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता – डॉ. शशि जेकव हिन्दी उपन्यास में नारी चित्रण – बिन्धु अग्रवाल

सुरेश सिन्हो – हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना

महादेवी वर्मा – श्रृंखला की कडिंयां

डॉ. उर्मिला गुप्ता – स्वातत्रयोत्तर कथा लेखिकाऐं

नीरा देसाई – भारतीय समाज में नारी

अनिल गोयल – हिन्दी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका